Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

(व्याख्या : पद्य खण्ड)

भाग-2

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHL13

दृष्टि The Vision

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

(व्याख्या : पद्य खण्ड)

भाग–2

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

भाग–2

4.	कवितावली (तुलसीदास) [उत्तरकांड की व्याख्या]	5-122
5.	रामचरितमानस (तुलसीदास) [सुन्दरकाण्ड की व्याख्या]	123-174
6.	बिहारी सतसई (आरंभिक सौ दोहों की व्याख्या)	175–222
7.	भारत-भारती (मैथिलीशरण गुप्त) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	223-229
8.	राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता (निराला) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	230-232
9.	कामायनी (जयशंकर प्रसाद) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	233-237
10.	कुरुक्षेत्र (दिनकर) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	238-252
11.	असाध्यवीणा (अज्ञेय) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	253-256
12.	ब्रह्मराक्षस (मुक्तिबोध) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	257-260
13.	अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा, बादल को घिरते देखा है (नागार्जुन) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]	261-264

अध्याय
4

कवितावली (तुलसीदास) [उत्तरकांड की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

बालि से बीर बिदारि सुकंठ थप्यो, हरषे सुर बाजने बाजे।
पल में दल्यो दासरथी दसकंधरु, लंक विभीषन राज बिराजे।।
राम सुभाव सुने 'तुलसी' हुलसे अलसी, हम से गलगाजे।
कायर कूर कपूतन की हद तेउ गरीबनेवाजे नेवाजे ।।1।।

शब्दार्थः बिदारि-मारकर। सुकंठु-सुग्रीव। थप्यो-स्थापित किया अर्थात् राजसिंहासन पर आसीन किया। हरषे-हर्षित हो गए। बाजने-वाद्य। पल में-क्षणमात्र में। दल्यो-वध किया। दासरथीं-दशरथ के पुत्र श्री रामचंद्र। दसकंधरु-रावण। रामसुभाउ-राम का स्वभाव। हुलसै-उल्लसित हुए। हम-से-हमारे समान (जन)। अलसी- आलस्ययुक्त, अकर्मण्य। गलगा जे-डीग हाँकने लगे, शेखी बघारने लगे। कूर-निर्दयी। कपूतन- कुपुत्र। हद-सीमा। तेउ-वे भी। गरीबनेवाज-दीनों के रक्षक। नेवाजे- दया की रक्षा की।

संदर्भः प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के उत्तरकांड से ली गई हैं।

प्रसंगः *इन पंक्तियों में तुलसीदास श्रीराम की महत्ता को उदाहरण के साथ बताते हैं। उनकी कृपालुता का वर्णन करते हैं।*

व्याख्याः श्रीराम इतने कृपालु हैं कि सुग्रीव को राज्य प्रदान करने के लिये बालि जैसे वीर को मार दिया, जिससे देवतागण प्रसन्न हो गए और उनकी प्रशंसा में बाजे बजाने लगे। इसी तरह दशरथपुत्र राम ने शक्तिशाली रावण को भी पलभर में मार गिराया और शरणागत (शरण में आए हुए) विभीषण को लंका की राजगद्दी पर सुशोभित किया। इसी कारण तुलसीदास कहते हैं कि उन जैसा आलसी रामजी का यही स्वभाव सुनकर प्रसन्न है कि जब वह कायर, क्रूर और कपूतों की हद पार कर देने वाले लोगों पर कृपा करते हैं अर्थात् उन्हें मुक्ति प्रदान करते हैं तो उस पर भी अवश्य ही कृपा करेंगे।

विशेषः

1. कवि श्रीराम के कृपालु एवं दीनरक्षक स्वरूप का वर्णन करते हैं।
2. वह श्रीराम के सगुण अर्थात् अवतारी रूप को स्वीकारते हैं।
3. तुलसी ने श्रीराम के भक्तवत्सल रूप को दर्शाने हेतु विभिन्न प्रसंगों का तार्किक सहारा लिया है।
4. गलगाजे और गरीबनेवाज नेवाजे मुहावरे का सटीक प्रयोग है।
5. स्वभावोक्ति, उदाहरण और अनुप्रास अलंकार है।

2

बेद पढ़ैं बिधि, संभु सभीत, पुजावन रावन सों नितु आवैं।
दानव-देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहि तें सिर नावैं।।
ऐसेउ भाग भगे दसभाल तें जो प्रभुता कवि कोविद गावैं।
राम से बाम भए तेहि बामहि बाम सबै सुख संपति लावैं ।।2।।

शब्दार्थः बिधि-ब्रह्मा। संभु-महादेव (शम्भु)। सभीत-भयभीत। पुजावन-पूजित कराने के हेतु। सों-से। नितु-नित्य। दयावने-दया के योग्य। कोविद-ज्ञानी, पंडित। दसभाल-दस मस्तकों वाला अर्थात् रावण। बाम-विमुख। बामहिं-कुटिल स्वभाव वाले की। बाम सबै सुख संपत्ति लावैं-सुख सम्पत्तियाँ हट जाती हैं (बाम लाना) अर्थात्। बाम लावैं-दूर हट जाना।

संदर्भः प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास रचित 'कवितावली' के उत्तरकांड से ली गई हैं।

अध्याय
5

रामचरितमानस (तुलसीदास)
[सुन्दरकाण्ड की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमन्त हृदय अति भाए।।
तब लगि मोहि परिखहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई।।
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी।।
अस कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथ।।
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर।।
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी।।
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता।।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। येही भाँति चलेउ हनुमाना।।
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी।।
***दोहा:** हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।*
राम काजु कीन्हे बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।।

शब्दार्थ: सुहाए-अच्छे लगे। हनुमन्त-हनुमान। लगि-तक। परिखेहु-राह देखना। हरष-आनंद, प्रसन्नता। काजु-कार्य। नाइ-नवाकर। हियँ-हृदय। धरि-ध्यानकर। तीर-तट। भूधर-पर्वत, पहाड़। कौतुक- खेल-खेल में, उत्सुकतावश, सँभारी-स्मरण कर। तरकेउ-उछले। पवनतनय-पवनपुत्र। गिरि-पर्वत। चरन-पैर। देइ-रखा। चलेउ-धँस गया। तुरंता-तुरंत, तत्क्षण, अमोघ-अचूक। सँभारी-ध्यान कर, जिमि- जैसे। बाना-वाण। जलनिधि-समुद्र। बिचारी-समझकर, तैं-तू। मैनाक- एक पर्वत का नाम, श्रमहारी-थकान दूर करने वाला। तेहि-उसको। परसा-स्पर्श किया। कर-हाथ। बिश्राम-आराम।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन रामभक्तिकाव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास के कालजयी महाकाव्य 'रामचरितमानस' के सुंदरकांड से उद्धृत हैं।

प्रसंग: *'रामचरितमानस' के किष्किन्धाकाण्ड के अन्त में हनुमान जी ने जामवन्त से उचित परामर्श देने की प्रार्थना की। जामवन्त ने हनुमानजी को उनकी प्रतिभा का स्मरण कराया तथा उचित सलाह भी दी। इससे हनुमानजी प्रेरित हो सीतामाता की खोज में चल पड़े।*

व्याख्या: जामवन्त के प्रेरक वचन सुनकर हनुमानजी हृदय से प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- 'हे भाई। तुम समस्त दु:ख सहकर, कन्द, मूल, फल खाकर तब तक मेरी राह देखना, जब तक मैं माँ सीता को देखकर वापस लौटूँ। कार्य अवश्य होगा, इसलिए मुझे विशेष खुशी हो रही है। ऐसा कहकर हनुमानजी ने शीश झुकाकर सबको प्रणाम किया और हृदय में श्रीरघुनाथ का स्मरण कर प्रसन्नतापूर्वक चल पड़े।

समुद्र के तट पर एक सुंदर पर्वत था। हनुमानजी सहजता से उसपर कूदकर चढ़ गए। बार-बार श्रीरघुवीर का स्मरण कर पवनपुत्र बड़े वेग से उसपर कूदे। जिस पर्वत पर हनुमानजी अपना पैर रखकर उछले, वह तुरन्त पाताल में चला गया। जिस प्रकार श्रीराम का बाण अचूक होता है, उसी प्रकार हनुमान जी वहाँ से चले।

समुद्र देव ने हनुमानजी को श्रीराम का दूत जानकर, मैनाक पर्वत से कहा कि वह उपस्थित हो जिससे हनुमानजी बैठकर थोड़ा आराम कर सकें। हनुमानजी ने मैनाक पर्वत को हाथ से स्पर्श कर पुन: उसे प्रणाम किया और कहा कि श्रीराम का काम किए बिना उन्हें आराम करने की सुध कहाँ है?

अध्याय
6

बिहारी सतसई (आरंभिक सौ दोहों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित-दुति होइ।।1।।

शब्दार्थः भव-बाधा-सांसारिक विघ्न बाधाएँ। नागरि-चतुर व श्रेष्ठ। झाँई-छाया व ध्यान। स्यामु-कृष्ण व पाप। हरित-हरा या हरे रंग करना। दुति-शीघ्र ही अथवा कान्ति।

संदर्भः प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारीलाल की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंगः *यह दोहा मंगलाचरण के रूप में है। अपनी सतसई की निर्विघ्न समाप्ति की कामना से कवि श्री राधा से सांसारिक बाधा दूर करने की प्रार्थना करता है। यहाँ बिहारी ने राधा-कृष्ण को लेकर चलने वाले कवियों की मंगलाचरण की उस परम्परा का पालन किया है, जिसमें कृष्ण की अपेक्षा राधा को विशेष महत्त्व और प्राथमिकता दी जाती है।*

व्याख्याः रत्नाकर ने इस दोहे के कई अर्थ प्रस्तुत किये हैं, जिनमें से दो अर्थ प्रमुख हैं-

मंगलाचरणपरक अर्थः हे श्रेष्ठ राधा! मेरी सांसारिक बाधाएँ दूर करो। जिनका ध्यान करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, जिनके दर्शन मात्र से श्रीकृष्ण भी प्रसन्न हो जाते हैं, वैसी श्रेष्ठ राधा मेरी बाधाओं को हरण करो। प्रस्तुत दोहे का मूल व्यंग्यार्थ यह है कि कवि ग्रंथ के आरंभ में राधा जी से समस्त सांसारिक बाधाओं को दूर कर पूर्ण काम करने की प्रार्थना कर रहा है।

भक्तिपरक अर्थः बिहारी कह रहे हैं कि कृष्ण को अपने रूप और भाव में निमग्न रखने की विचित्र क्षमता रखने वाली हे राधे! मेरी समस्त बाधाएँ दूर कर दो। जिस प्रकार आपके रूप का स्मरण होते ही कृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं अथवा आपकी कान्ति मात्र पड़ने से भक्त सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार मेरे पाप हरो।

विशेषः

1. मंगलाचरण भारतीय काव्य-परम्परा का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है।
2. इस दोहे में बिहारी की भक्ति-भावना दिखाई देती है।
3. प्रस्तुत दोहे में काव्यलिंग और श्लेष अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।
4. राधा की दया वीरता का वर्णन हुआ है
5. इस दोहे में बिहारी ने सधी एवं परिष्कृत ब्रजभाषा का अत्यंत रचनात्मक प्रयोग किया है।

2

अपने अंग के जानि कै जोबन-नृपति प्रबीन।
स्तन, मन नैन, नितंब की बड़ौ इजाफा कीन।।2।।

शब्दार्थः इजाफा-वृद्धि, तरक्की।

संदर्भः प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारीलाल की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंगः *प्रस्तुत दोहे में यौवनोन्मेषमूलक नारी-सौंदर्य का संश्लिष्ट चित्रण किया गया है। साथ ही यह दोहा बिहारी के राजनीति ज्ञान का भी परिचायक है। इस दोहे में नायक द्वारा अपनी बाल्यावस्था में अपनाई गई प्रेयसी के यौवन पर अधिकार से उत्पन्न मन की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त हुई है।*

व्याख्याः नवयौवना नायिका के शरीर तथा उत्साह में वृद्धि देखकर नायक (अथवा सखी से)स्वगत कह रहा है कि अपने पक्ष या अधिकार में आये हुए यौवन रूपी राजा (नायक) ने नायिकाओं के चार अंगों पर अधिकार स्थापित कर लिया

अध्याय
7

भारत-भारती (मैथिलीशरण गुप्त)
[महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

चर्चा हमारी भी कभी संसार में सर्वत्र थी,
वह सद्‌गुणों की कीर्ति मानो एक और कलत्र थी।
इस दुर्दशा का स्वप्न में भी क्या हमें कुछ ध्यान था?
क्या इस पतन ही को हमारा वह अतुल उत्थान था! (4)

शब्दार्थ– कीर्ति-प्रसिद्धि। कलत्र-पत्नी, भार्या।

संदर्भ व प्रसंग: *प्रस्तुत काव्यांश द्विवेदीयुगीन हिन्दी कविता के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रसिद्ध काव्य 'भारत-भारती' के 'अतीतखण्ड' से उद्धृत है।*

कवि इन पंक्तियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आदर्श से प्रेरित होकर वर्तमान की दुर्दशा का वर्णन भूतकाल की समृद्धि के आलोक में कर रहा है।

व्याख्या: कवि कहता है कि भारतवर्ष की स्थिति सदैव वर्तमान की तरह दयनीय नहीं थी। भारत कभी जगद्‌गुरु तथा विश्व में सिरमौर होकर चर्चा का पात्र था। हमारे सद्‌गुणों का बखान पूरा संसार करता था। तब किसी ने शायद सपने में भी नहीं सोचा होगा कि हमारा वर्तमान इतना दयनीय हो जाएगा।

कवि उत्थान-पतन के कालक्रमिक चक्र को उद्धृत करते हुए शोक करता है कि क्या इस पतन के लिये ही हमारा उत्थान हुआ था?

विशेष:

1. गुप्त जी की भाषा में अभिधात्मकता का प्रवाह लगातार व्याप्त है जिसके कारण अर्थबोध सरल हो गया है तथा 'तत्समबहुलता' ने 'अस्पष्टता' का रूप नहीं लिया है।
2. 'सांस्कृतिक नवजागरण' का भाव लगातार व्याप्त है जिसके कारण अतीत की गौरवशाली व्याख्या की गई है।
3. भारतीय दर्शनानुसार **काल की चक्रीय अवधारणा** का भाव दिखाई देता है।
4. ऐसा ही भाव जयशंकर प्रसाद के कुछ नाटकों में भी दिखाई पड़ता होता है।

2

उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी,
जो हो रहा अवनत अभी, उन्नत रहा होगा कभी।
हँसते प्रथम जो पद्म हैं तम-पंक में फँसते वही,
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो अन्त में हँसते वही।। (5)

शब्दार्थ: पद्म-कमल। तम-अंधकार। पंक-कीचड़। कुमुद-कमल।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत काव्यांश द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रसिद्ध काव्य 'भारत-भारती' के 'अतीतखंड' से उद्धृत है। कवि काल की* **चक्रीय अवधारणा** *को आधार बनाते हुए भूतकाल के गौरव के आलोक में वर्तमान की दुर्दशा व्यक्त कर रहा है।*

व्याख्या: कवि कहता है कि काल की गति ही ऐसी है कि हर देश, व्यक्ति व समाज को उन्नति व अवनति का सामना करना पड़ता है। ऐसा ही दुर्भाग्य भारतवर्ष का हुआ है जिसे सर्वत्रोन्नति के बाद अवनति का सामना करना पड़ रहा है।

जो कमल पहले खिलते हैं, वे कीचड़ व अंधकार में मुरझाते भी पहले ही हैं तथा मुरझाए कमल सुबह होने पर पुनः खिल जाते हैं। अतः भारतवर्ष भी अब अवनति के समय के बाद पुनः विकास करेगा।

अध्याय
8

राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता (निराला)
[महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

राम की शक्तिपूजा

1

रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

संदर्भ एवं प्रसंग: *दी गई काव्य-पंक्तियाँ छायावाद के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि 'महाप्राण' निराला द्वारा 1936 ई. में रचित लंबी प्रबंधात्मक कविता 'राम की शक्तिपूजा' से ली गई हैं। प्रसंग सानु-सभा का है। राम ने अभी-अभी सभी को बताया है कि युद्ध में विजय संभव नहीं है क्योंकि रावण के आमंत्रण पर स्वयं देवी दुर्गा उसके पक्ष में आ गई हैं। इस निराशा को चीरते हुए अनुभवी सेनापति जाम्बवंत ने यह कथन राम के उद्‌बोधन हेतु कहा है।*

व्याख्या: जाम्बवंत कहते हैं- हे रघुवर! अशुद्ध आचरण वाला रावण यदि शक्ति के प्रभाव से आपको परेशान कर सकता है; तो आप महाशक्ति की आराधना करके उसे अपने पक्ष में कर निश्चय ही उसकी मृत्यु का कारण बनेंगे। अत: इसके लिए आप इस शक्ति का ऐसा मौलिक चिन्तन कीजिए जो रावण के इस अन्याय का साथ देने वाली शक्ति से अधिक शक्तिशाली हो। इसलिए इस नवीन शक्ति का पूजन भी नवीन विधि से कीजिए तथा जब तक आपको पूर्णत: सिद्धि प्राप्त न हो जाए, तब तक आप युद्ध से अलग हो जाएँ।

विशेष:

1. ये पंक्तियाँ इस कविता में केंद्रीय महत्व रखती हैं। कविता में अमानिशा जैसी निराशा के कुहासे को चीरने वाली पंक्तियाँ यही हैं, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र है- 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना।'
2. ये पंक्तियाँ जितनी राम-रावण युद्ध पर लागू होती हैं, उससे कहीं ज्यादा 1936 ई. के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन व निराला के वैयक्तिक जीवन पर।
3. निराला सृजनशील कवि हैं, इसलिए मौलिकता की शक्ति पहचानते हैं।
4. इन पंक्तियों की भाषा अपनी प्रकृति में तत्समी है। भाषा में प्रवाह अद्‌भुत है।

प्रासंगिकता: ये पंक्तियाँ शाश्वत प्रासंगिकता धारण करती हैं। सत्य-असत्य का संघर्ष अलग-अलग मुखौटों में हर दौर में दिखाई पड़ता है। सत्य के पक्ष को असत्य से टकराने के लिए शक्ति की मौलिक कल्पनाएँ करनी ही पड़ती हैं।

2

शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

उत्तर: संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिन्दी कविता के छायावादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध लंबी कविता 'राम की शक्ति-पूजा' से उद्धृत हैं। युद्ध-भूमि से पराजय भावना से ग्रस्त होकर

अध्याय
9

कामायनी (जयशंकर प्रसाद) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

चिन्ता सर्ग

1

ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली!
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा!
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल-माया की चल-रेखा!

संदर्भ व प्रसंग: *प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी कविता की छायावादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद के भाव प्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के 'चिंता सर्ग' से उद्धृत हैं।*

कवि यहाँ देव जाति के सर्वनाश के पश्चात् मनु के मन में व्याप्त चिन्ता की सघनता का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या: मनु चिंता प्रकट करते हुए कहते हैं अरी चिंता! तू पहली बार मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न हुई है। परंतु तू बड़ी भयंकर है। तू उस सर्पिणी के समान है जिसके कारण किसी वन में स्वच्छन्दतापूर्वक आनंद से विचरण नहीं किया जा सकता। तू ज्वालामुखी पर्वत के समान अनियंत्रित है जो किसी के भी मन में भय उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त है।

चिंता सदैव अभाव में ही पैदा होती है अत: उसे अभाव की पुत्री संबोधित करते हुए मनु कहते हैं कि तू मनुष्य के भाग्य की दुष्ट रेखा है जिसके होने से मनुष्य निरर्थक परिश्रम करता रहता है और उसे अंत में कुछ प्राप्त नहीं होता।

विशेष:

1. चिंता मनोभाव से संबंधित मनोविज्ञान का सूक्ष्म वर्णन हुआ है।
2. चिंता एक अमूर्त भाव है जिसको कवि ने समर्थता के साथ मूर्त किया है। व्याली का उपमान चिंता के घातक प्रभाव को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर देता है। जिस प्रकार व्याली की उपस्थिति वन के सौन्दर्य को विभीषिकापूर्ण बना देता है उसी प्रकार चिंता मनुष्य के सुंदर जीवन को छिन्न-भिन्न कर देती है।
3. 'पहली रेखा' तथा 'प्रथम कम्प' इस बात का द्योतक है कि देवजाति के पुरुष मनु को इसके पहले कभी चिंता या अनुभव नहीं हुआ। यह इस बात का द्योतक है कि इसके पूर्व देव-सभ्यता भोग-विलास में बुरी तरह डूबी हुई थी जो उसके पतन का कारण बनी।
4. भाषा संस्कृतनिष्ठ तद्भवीकृत खड़ी बोली
5. रूपक, और उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।
6. 'हे अभाव की चपल बालि के में मानवीकरण अलंकार है।

2

ओ जीवन की मरु-मरीचिका कायरता के अलस विषाद!
अरे पुरातन अमृत! अगतिमय मोहमुग्ध जर्जर अवसाद!
मौन! नाश! विध्वंस! अँधेरा! शून्य बना जो प्रकट अभाव,
वही सत्य है, अरी अमरते! तुझको यहाँ कहाँ अब ठाँव।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखंड आधुनिक कविता के पुरोधा कवि जयशंकर प्रसाद के भाव प्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के 'चिंता सर्ग' से उद्धृत है।

प्रसंग: *मनु यहाँ पर देवों की पुरानी अमरता की भावना को घृणास्पद दृष्टि से धिक्कार रहे हैं।*

अध्याय
10

कुरुक्षेत्र (दिनकर) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

द्वितीय सर्ग

1

एक ओर सत्यमयी गीता भगवान की है,
एक ओर जीवन की विरति प्रबुद्ध है;
जानता हूँ, लड़ना पड़ा था हो विवश, किन्तु,
लोहू-सनी जीत मुझे दीखती अशुद्ध है;
ध्वंसजन्य सुख याकि साश्रु दुख शान्तिजन्य,
ज्ञात नहीं, कौन बात नीति के विरुद्ध है;
जानता नहीं मैं कुरुक्षेत्र में खिला है पुण्य,
या महान पाप यहाँ फूटा बन युद्ध है।

शब्दार्थः विरति-अनासवित, प्रबुद्ध-जागृत, लोहू-रक्त, साश्रु-आँसुओं से भरा, अश्रुमय

संदर्भः प्रस्तुत काव्यांश राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य 'कुरुक्षेत्र' के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंगः *दिनकर यहाँ कुरुक्षेत्र (महाभारत) के युद्ध की समाप्ति के पश्चात् व्यथित युधिष्ठिर की मनोदशा को भीष्म-युधिष्ठिर संवाद के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं।*

व्याख्याः युधिष्ठिर व्यथित मनोदशा में भीष्म पितामह के पास जाते हैं और प्रश्न करते हुए अपनी शंकाएँ प्रस्तुत करते हैं।

युधिष्ठिर कहते हैं कि हे पितामह! मैं इस कृत्रिम विजय से अपने मन को प्रसन्न नहीं रख पा रहा हूँ। एक तरफ जहाँ गीता का उपदेश मुझे कर्मरत् रहने हेतु प्रेरित कर रहा है तो दूसरी तरफ चारों तरफ दुःख देखकर मेरे अंदर अनासक्ति का भाव प्रबल हो रहा है।

युधिष्ठिर कहते हैं कि विवशतावश मुझे युद्ध जरूर करना पड़ा था परंतु ऐसी विजय जिसमें रक्तपात की समस्त सीमाएँ लाँघ दी गई हों, मेरे हृदय को संतुष्टि नहीं बल्कि अपराधबोध का अनुभव कराती है।

युधिष्ठिर निर्णय नहीं कर पा रहे हैं कि इतने विध्वंस से प्राप्त सुख नीतिसंगत है या फिर दुःख से ओत-प्रोत शांति। ऐसी अनिर्णय की स्थिति है कि यह तय नहीं हो पा रहा है कि महाभारत का युद्ध पुण्य लेकर आया है या पाप!

विशेषः

1. युधिष्ठिर के भीतर की मनोव्यथा व द्वंद्व को मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है।
2. प्रकारान्तर से ये पंक्तियाँ महात्मा गाँधी की अहिंसावादी दृष्टि को प्रकट कर रही हैं जिनसे दिनकर इस रचना में अलग जाते दिखाई देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर हिंसा के मार्ग को भी अनुचित नहीं मानते।
3. गीता को यहाँ कर्म प्रधानता का संकेत बनाकर उभारा गया है।
4. दिनकर की भाषा तत्समबहुलता को धारण करती है जो 'ध्वंसजन्य', 'साश्रु' आदि शब्दों से स्पष्ट है।
5. ऐसी ही मनोदशा जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' के नायक के यहाँ दिखती है। जहाँ उसे युद्ध व्यर्थ-श्रम का विषय प्रतीत होता है।

2

भीष्म ने देखा गगन की ओर
मापते, मानो, युधिष्ठिर के हृदय का छोर;

अध्याय
11

असाध्यवीणा (अज्ञेय) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद तथा नयी कविता काव्यान्दोलनों के प्रस्तावक कवि अज्ञेय द्वारा रचित लंबी कविता 'असाध्यवीणा' से ली गयी हैं, जिसे अज्ञेय की कला-दृष्टि व जीवन-दृष्टि का निचोड़ माना जाता है।*

व्याख्या: राजा के सामने सृजन के प्रतीक वीणा को कई कलावंत अपने सारे ज्ञान का उपयोग करते हुए साधने का प्रयत्न करते रहें लेकिन वे इसमें असमर्थ रहते हैं। यह उनके ज्ञान की व्यर्थता और अहंकार के पराभव को दर्शाता है। किन्तु राजा को अब भी विश्वास है कि वज्रकीर्ति की साधना का परिणाम यह वीणा एक दिन अवश्य सधेगी। वह दिन तब आएगा जब कोई सच्चा स्वर-साधक इस हेतु प्रयत्न करेगा।

विशेष:

1. इन पंक्तियों के माध्यम से अज्ञेय ज्ञान के साथ अनुभूति की ताप और अहं की अस्मिता के साथ अहं के विलयन पर बल दे रहे हैं।
2. 'पर मेरा अब भी है विश्वास' पंक्ति भारतीय परंपरा में निहित आस्था को महत्त्व दे रही है।
3. 'वीणा' सृजन का प्रतीक है।
4. 'वीणा बोलेगी अवश्य' रचनाकार की सृजन शक्ति में आस्था को व्यक्त करती है।
5. इन पंक्तियों में जो आस्था और विश्वास का भाव निहित है कुछ वैसी ही आस्था और विश्वास निराला की कविता 'राम की शक्तिपूजा' में 'जामवंत' के भीतर भी मौजूद है।
6. अज्ञेय की भाषा की प्रमुख विशेषता है– शब्दों की मितव्ययता। शब्दों के कसाव का ऐसा उदाहरण शायद ही अन्यत्र कहीं देखने को मिले।
7. छंद की परंपरा का निर्वाह न होने के बावजूद आंतरिक लय लगातार विद्यमान है।

2

पर उस स्पन्दित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा–
नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा था।
सघन निविड़ में वह अपने को
सौंप रहा था उसी किरीटी-तरु को।

अध्याय
12 ब्रह्मराक्षस (मुक्तिबोध) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

बावड़ी की उन घनी गहराइयों में शून्य
ब्रह्मराक्षस एक पैठा है,
व भीतर से उमड़ती गूँज की भी गूँज,
बड़बड़ाहट-शब्द पागल से।
गहन अनुमानिता
तन की मलिनता
दूर करने के लिए प्रतिपल
पाप-छाया दूर करने के लिए, दिन-रात
स्वच्छ करने-
ब्रह्मराक्षस
घिस रहा है देह
हाथ के पंजे, बराबर
बाँह-छाती-मुँह छपाछप
खूब करते साफ़,
फिर भी मैल
फिर भी मैल!!

शब्दार्थ: पैठा=घुसा हुआ। अनुमानिता=अनुमान। मलिनता=अस्वच्छता।

संदर्भ व प्रसंग: *प्रस्तुत पद्यांश नई कविता व प्रगतिवाद के पुरोधा कवि* **गजानन माधव मुक्तिबोध** *की रचना 'ब्रह्मराक्षस' से उद्धृत है। कवि यहाँ भावी रहस्यमयता का वातावरण निर्मित करने के बाद ब्रह्मराक्षस की किंवदन्ती के माध्यम से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की छटपटाहट को प्रस्तुत कर रहा है।*

व्याख्या: बावड़ी के उस ओर घने अंधेरे में ब्रह्मराक्षस घुसकर बैठा है। जो अपना ज्ञान किसी को न दे पाने के कारण प्रेतयोनि में भटक रहा है और अपने पापों की छाया मिटाने के लिये दिन रात अपनी देह को धोता रहता है। अर्थात् विश्वचेतस न हो पाने की आत्मग्लानि से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी लगातार विचलित है और अपने पापों का प्रायश्चित करने का प्रयास करता रहता है।

विशेष:

1. मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के अपना दायित्व न निभा पाने के अपराध-बोध व द्वंद्व को इन पंक्तियों में अभिव्यक्ति मिली है।
2. प्रतीकात्मक भाषा एवं फैंटेसी शिल्प का प्रयोग मुक्तिबोध के काव्य की विभेदक विशेषता है।
3. ***'गूँज की भी गूँज'*** अचेतन मन को प्रदर्शित कर रहा है।
4. इन पंक्तियों में मुक्तिबोध ने गतिशील चाक्षुष बिम्ब का कुशल निर्माण किया है।

अध्याय
13

अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा, बादल को घिरते देखा है (नागार्जुन) [महत्त्वपूर्ण काव्यांशों की व्याख्या]

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

अकाल और उसके बाद

1

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

शब्दार्थ– भीत=भीतर। शिकस्त = दयनीय।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत पंक्तियाँ नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' से उद्धृत की गई हैं। इन पंक्तियों में वह अकाल के समय में अभावग्रस्त निम्नवर्गीय जीवन का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हैं। आशा व निराशा की मन:स्थिति का जीवंत दृश्य चित्र नागार्जुन के काव्य वैभव का सशक्त साक्ष्य है।*

व्याख्या: अकाल के बाद घर में अन्न न होने की स्थिति में पूरा वातावरण उदासीन हो गया है। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो चूल्हा रो रहा हो। चक्की भी उदास है, क्योंकि आटा पीसने वाली औरतों के मधुर गीत शांत हो गए हैं। कुतिया भी भोजन न होने की स्थिति में भोजन की आशा से गृहस्वामी के पास सो रही है। यहाँ तक कि चूहे और छिपकलियों की हालत भी भूख के कारण खराब है।

विशेष:

1. सरल सर्वजनसुलभ व्यवहारिक काव्य-भाषा का प्रयोग इन पंक्तियों में हुआ है।
2. वर्णनात्मक शैली में संवेदनशीलता और स्थिति की भयावहता घुली हुई है।
3. चूल्हा और चक्की का मानवीकरण आकर्षक और अर्थव्यंजक बन पड़ा है।
4. बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से कवि अकाल की भयावहता को संपूर्णता के साथ पाठक के समक्ष उपस्थित कर देता है।
5. चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया प्रकृति में सहज किंतु काव्य में दुर्लभ प्रतीक हैं। ऐसे ही आम जन-जीवन के प्रतीकों से प्रेम के कारण नागार्जुन 'जनकवि' कहलाते हैं।

हरिजन गाथा

1

'अरे भगाओ इस बालक को,
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456